आरती श्री चौबीस भगवान की

कंचन की थाली लाया, रत्नों का दीप सजाया, गोघृत से भरिया थारी आरती। हो देवा।
जगतारी श्री ऋषभदेव जी, अजित अजित पद थारी।
संभव भव दुख मेटन हारे, अभिनन्दन सुखकारी।
गुणों की गरिमा गावें, भक्ति से शीष झुकावें, करते हैं भविजन।
थारी आरती । हो वीरा.....

सुमति नाथ सुमती को लावें, पद्म प्रभु पद्मावर ध्याये।
सुपार्श्वनाथ का शरणाभारी, चन्द्र प्रभु जिनभव भय हारी।
सुरासुर चंदन आवें, बहुविधि से पूज रचावें, नचि नचि कर करते।
थारी आरती । हो वीरा.....

पुष्प दंत पुष्पसम सुरभित, शीतल ज्ञान अनन्ता गर्भित।
श्रेयांस करें कल्याण सभी का, वासुपूज्य बन्दू नुतशीषा।
सुरासुर मंगल गावें मन में अति ही हर्षावें, सांझ सवेरे करें आरती।
थारी आरती । हो वीरा.....

विमलनाथ का निर्मल आतम, अनन्तनाथ जी बने परमातम।
धर्म नाथ की धर्म ध्वजा है, शान्ति नाथ त्रिभुवन राजा हैं।
हम सब जन मिलकर ध्यावें, चरनन में बलि बलि जावें, सुस्वरे।
से गावें थारी आरती। हो वीरा.....

कुन्थनाथ प्रभु जग के त्राता, अरहनाथ शुचि ज्ञान प्रदाता।
मल्लि जिनेश्वर मल परिहारी, मुनि सुव्रत पूरण व्रतधारी।
त्रिभुवन में सुखकारी, महिमा हैं जिनकी न्यारी सब मिल उतारें।
थारी आरती । हो वीरा.....

नमि प्रभु हो नमन हमारा नेमि जिनेश्वर योग निवारा।
पार्श्वनाथ फणपति ने पूजे, महावर समदेव न दूजे।
समकित का दीप जलावें, ज्ञान की ज्योति पावे, हो जाये सफला।
थारी आरती । हो वीरा.....

चौबीसों जिन मोक्ष पधारे, अनन्त, ज्ञान के सुख भंडारे।
दर्शअनन्त अरू विर्य अनन्ता, 'रतन' हृदय धारत भगवन्ता।
दरब सु आठों सजाया, जिनवर का पूज रचाया, हम सब उतारें।
थारी आरती । हो वीरा.....